काजू की खेती कैसे करें

काजू का प्रयोग मदिरा बनाने में भी किया जाता है, काजू के छिलके का इस्तेमाल पेंट से लेकर स्नेहक (लुब्रिकेंट्स) तक में होता है

काजू की खेती से करें बंपर कमाई, हर समय रहती है हाई डिमांड

काजू की व्यावसायिक खेती दिनों-दिन लगातार बढ़ती जा रही है क्योंकि काजू सभी अहम कार्यक्रमों या उत्सवों में अल्पाहार या नाश्ता का जरूरी हिस्सा बन गया है। देश में ही नहीं, विदेशी बाजारों में भी काजू की बहुत अच्छी मांग है

ड्राई फ्रूट की बढ़ती मांग से किसानों का रूझान अब इस ओर होने लगा है। कई किसान ड्राई फ्रूट जैसे- काजू, बादाम, अखरोट, किशमिश, पिस्ता की खेती करके लाखों की कमाई कर रहे हैं। त्योहारों में ड्राई फ्रूड की मांग काफी अधिक रहती है। अधिकतर लोग त्योहार में बाजार की मिठाई की जगह अपने नाते-रिश्तेदारों को उपहार स्वरूप ड्राई ड्राई फ्रूट ही देना अधिक पसंद करते हैं। देश में काजू का आयात निर्यात का एक बड़ा व्यापार भी है। देश के कई राज्यों में इसकी खेती की जाती है।

क्यों करें काजू की खेती?/ काजू का उपयोग

काजू की व्यावसायिक खेती दिनों-दिन लगातार बढ़ती जा रही है क्योंकि काजू सभी अहम कार्यक्रमों या उत्सवों में अल्पाहार या नाश्ता का जरूरी हिस्सा बन गया है। देश में ही नहीं, विदेशी बाजारों में भी काजू की बहुत अच्छी मांग है। काजू का उपभोग कई तरह से किया जाता है। काजू का प्रयोग अनेक प्रकार की मिठाइयों में किया जाता है। इसके अलावा इसका उपयोग मदिरा बनाने में भी किया जाता है। काजू के छिलके का इस्तेमाल पेंट से लेकर स्नेहक (लुब्रिकेंट्स) तक में होता है।

काजू का पौधा कैसा होता है : काजू का पेड़ तेजी से बढ़ने वाला उष्णकटिबंधीय पेड़ है जो काजू और काजू का बीज पैदा करता है। काजू की उत्पत्ति ब्राजील से हुई है। किंतु आजकल इसकी खेती दुनिया के अधिकांश देशों में की जाती है। सामान्य तौर पर काजू का पेड़ 13 से 14 मीटर तक बढ़ता है। हालांकि काजू की बौनी कल्टीवर प्रजाति जो 6 मीटर की ऊंचाई तक बढ़ता है, जल्दी तैयार होने और ज्यादा उपज देने की वजह से बहुत फायदेमंद साबित हो रहा है। काजू के पौधारोपण के तीन साल बाद फूल आने लगते हैं और उसके दो महीने के भीतर पककर तैयार हो जाता है। बगीचे का बेहतर प्रबंधन और ज्यादा पैदावार देनेवाले प्रकार (कल्टीवर्स) का चयन व्यावसायिक उत्पादकों के लिए बेहद फायदेमंद साबित हो सकता है।

भारत में काजू की खेती : काजू के उत्पादक क्षेत्र / काजू का उत्पादन कहां होता है: एशियाई देशों में अधिकांश तटीय इलाके काजू उत्पादन के बड़े क्षेत्र हैं। भारत में इसकी खेती मुख्य रूप से केरल, महाराष्ट्र, गोवा, कर्नाटक, तामिलनाडु, आंध्र प्रदेश, उड़ीसा एवं पं. बंगाल में की जाती है परंतु झारखंड राज्य के कुछ जिले जो बंगाल और उडीसा से सटे हुए हैं वहां पर भी इसकी खेती की अच्छी संभावनाएं हैं। अब तो मध्यप्रदेश में इसकी खेती होने लगी है।

काजू का खेती : काजू की प्रमुख किस्में

काजू की प्रमुख किस्मों में वेगुरला-4, उल्लाल -2, उल्लाल -4, बी.पी.पी.-1, बी.पी.पी.-2, टी.-40 आदि अच्छी किस्में मानी जाती है।

काजू की खेती के लिए जलवायु

काजू एक उष्ण कटिबन्धीय फसल है जो गर्म एवं उष्ण जलवायु में अच्छी पैदावार देता है। 700 मी. ऊंचाई वाले क्षेत्र जहां पर तापमान 20 सें.ग्रे. से ऊपर रहता है काजू की अच्छी उपज होती है। 600-4500 मि.मी. वार्षिक वर्षा वाले क्षेत्र के लिए अच्छे माने जाते हैं। इसके लिए पाला और नुकसान दायक होता है। इसलिए इसकी फसल को पाले से बचना जरूरी होता है। जिन क्षेत्रों में पाला या लंबे समय तक सर्दी पड़ती है वहां इसकी खेती प्रभावित होती है।

काजू की खेती के लिए भूमि/मिट्टी

वैसे तो काजू की खेती कई प्रकार की मिट्टी में की जा सकती है लेकिन समुद्र तटीय प्रभाव वाली लाल एवं लेटराइट मिट्टी वाले क्षेत्र इसकी खेती के लिए ज्यादा उपयुक्त रहते हैं। इसके साथ ही मिट्टी का पीएच स्तर 8.0 तक होना चाहिए। काजू उगाने के लिए खनिजों से समृद्ध शुद्ध रेतीली मिट्टी को भी चुना जा सकता है।

काजू उत्पादन के लिए खेत की तैयारी

काजू की खेती के लिए खेत की तैयारी करते समय खेत की ट्रैक्टर, कल्टीवेटर 2-3 बार जुताई कर दें करनी चाहिए। इसके बाद पाटा लगाकर खेत को समतल कर लेन चाहिए जिससे नये पौधों को प्रारम्भिक अवस्था में पनपने में कोई कठिनाई न हो। इस बात का ध्यान रखें की खेत में किसी प्रकार की खरपतवार नहीं होनी चाहिए।

काजू की खेती के लिए कैसे करें गड्ढे तैयार

खेत की तैयारी के बाद अप्रैल-मई के महीने में निश्चित दूरी पर 60× 60 × 60 सें.मी. आकार के गड्ढे तैयार कर लें। अगर जमीन में कठोर परत है तो गड्ढे के आकार को आवश्यकताअनुसार बढ़ाया जा सकता है। गड्ढों को 15-20 दिन तक खुला छोडने के बाद 5 कि.ग्रा. गोबर की खाद या कम्पोस्ट, 2 कि.ग्रा. रॉक फॉस्फेट या डीएपी के मिश्रण को गड्ढे की ऊपरी मिट्टी में मिलाकर भर देना चाहिए। गड्ढों के आसपास ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए कि वहां पानी इक्ट्ठा नहीं हो। अधिक सघनता से बाग लगाने के दौरान पौधों की दूरी 5×5 या 4×4 मी. रखनी चाहिए।

काजू की पौध तैयार करना: काजू के पौधों को साफ्ट वुड ग्राफ्टिंग विधि से तैयार किया जा सकता है। भेंट कलम द्वारा भी पौधों को तैयार कर सकते हैं। पौधा तैयार करने का उपयुक्त समय मई-जुलाई का महीना होता है।

काजू के पौधों का रोपण: काजू के पौधों को वर्षा काल लगाना अच्छा रहता है। तैयार गड्ढों में पौधा रोपने के बाद थाला बना देते हैं तथा थालों में खरपतवार की समय-समय पर निकाई-गुड़ाई करते रहते हैं। जल संरक्षण के किए थालों में सूखी घास का पलवार भी बिछाते हैं।

खाद एवं उर्वरक: हर साल पौधों को 10-15 कि.ग्रा. गोबर की खाद देनी चाहिए। इसके साथ ही रासायनिक उर्वरकों की भी उपयुक्त मात्रा देनी चाहिए। प्रथम वर्ष में 300 ग्राम यूरिया, 200 ग्राम रॉक फास्फेट, 70 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश प्रति पौधा की दर से देनी चाहिए। वहीं दूसरे वर्ष इसकी मात्रा दुगुनी कर देनी चाहिए तथा तीसरे वर्ष के बाद पौधों को 1 कि.ग्रा. यूरिया, 600 ग्रा. रॉक फास्फेट एवं 200 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश प्रति वर्ष मई-जून और सितंबर-अक्टूबर के महीनों में आधा-आधा बांटकर देते रहे।

काजू के पौधों की छटाई : काजू के पौधों को प्रारंभिक अवस्था में अच्छा आकार देने की जरूरत होती है। इसके लिए इसकी समय-समय पर छटाई करते रहना चाहिए। पौधो को अच्छा आकार देने के बाद सूखी, रोग एवं कीट ग्रसित तथा कैंची शाखाओं को काटते रहना चाहिए।

पौध संरक्षण: काजू में 'टी मास्कीटो बग' की प्रमुख समस्या होती है। यदि इसका प्रकोप दिखाई दे तो इसके लिए नीचे दिए गए अनुसार छिड़काव करना चाहिए।

पहला स्प्रे- काजू की फसल में पहला स्प्रे या छिड़काव कल्ले आते समय करना चाहिए। इसके लिए मोनोक्रोटोफास (0.05 प्रतिशत) का छिड़काव किया जाता है।

दूसरा स्प्रे फूल आते समय किया जाना चाहिए। इसमें कर्वेरिल (0.1 प्रतिशत) का छिड़काव किया जाना चाहिए।

तीसरा स्प्रे फल लगते समय करना चाहिए। इसमें कार्वेरिल (0.1 प्रतिशत) का स्प्रे या छिड़काव किया जाता है।

फसल तोड़ाई और प्राप्त उपज: काजू में पूरे फल की तोड़ाई नहीं की जाती है केवल गिरे हुए नट को एकत्र किया जाता है और इसे धूप में, सुखाकर तथा जूट के बोरों में भरकर ऊंचे स्थान पर रख दिया जाता है। प्रत्येक पौधे से लगभग 8 किलोग्राम नट प्रतिवर्ष प्राप्त होता है। इस प्रकार एक हेक्टेयर में लगभग 10-15 क्विंटल काजू ने नट प्राप्त होते है। जिनको प्रसंस्करण के बाद खाने योग्य काजू प्राप्त होता है।

किसानों को मालामाल करेगी बादाम की खेती, बस एक बार लगाएं पौधा और 50 साल तक कमाते रहें मुनाफा!

ड्राई फ्रूट में बादाम का अपना एक महत्वपूर्ण स्थान हैं। इसका उपयोग खाने के अलावा मिठाई बनाने में किया जाता है। सर्दियों में बादाम के लड्डू बनाए जाते हैं जो काफी स्वास्थ्यवर्धक होते हैं। बादाम का सेवन स्वास्थ्य की दृष्टि से काफी अच्छा माना गया है। इसी के साथ इसका तेल का उपयोग बालों और दिमाग के लिए लाभकारी बताया गया है। भारत में बादाम का प्रयोग शादियों, जन्मदिन और नव वर्ष पर गिफ्ट पैक के रूप में किया जाता है। प्रमुख त्योहारों और मांगलिक अवसरों पर आज मिठाई की जगह लोग ड्राई फ्रूट का आदान-प्रदान करते हैं जिसमें बादाम को प्रमुख रूप से शामिल किया जाता है।

बाजार में अच्छे मिलते हैं बादाम के भाव

इतनी सारी विशेषताओं के कारण भारत में बादाम का उत्पादन निरंतर बढ़ रहा है। इसी के साथ बादाम के बाजार भाव भी अच्छे मिलते हैं। इन सब बातों को देखते हुए किसानों के लिए बादाम की खेती करना लाभ का सौंदा साबित हो सकता है। आज हम ट्रैक्टर जंक्शन के माध्यम से किसान भाइयों को बादाम की खेती की जानकारी दें रहे हैं। आशा करते हैं हमारे द्वारा दी गई जानकारी आपके लिए लाभकारी होगी।

कैसा होता है बादाम का पेड़:बादाम का पेड़ एक मध्यम से आकार का पेड़ होता है और जिसमें गुलाबी और सफेद रंग के सुगंधित फूल लगते हैं। ये पेड़ पर्वतीय क्षेत्रों में अधिक मात्रा में पाए जाते हैं। इसके तने मोटे होते हैं। इसके पत्ते लंबे, चौड़े और मुलायम होते हैं। इसके फल के अंदर की मिंगी (गिरी) को बादाम कहते हैं।

भारत में कहां-कहां होती है बादाम की खेती

भारत में बादाम की खेती मुख्य रूप से कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड जैसे ठंडे क्षेत्रों और चीन की सीमा से लगे तिब्बत, लाहौल एवं किन्नोर जिले आदि में की जाती है। लेकिन अब इसकी शौकिया तौर पर खेती बिहार, यूपी और एमपी में भी की जा रही है। बिहार-यूपी-एमपी जैसे राज्यों के किसानों ने बादाम के पौधे लगाए हैं जो अब बड़े होकर फल देने लगे हैं। हाल ही में ग्वालियर के डबरा कस्बे के एक किसान का न्यूज काफी वायरल हुआ

था। दरअसल डबरा कस्बे के किसान प्रभुदयाल ने शौकिया तौर पर बादाम का पेड़ लगाया था जो अब फल देने लगा है। इससे यह सिद्ध होता है कि कुछ सावधानियों के साथ इसकी खेती गर्म जलवायु में भी की जा सकती है।

बादाम के प्रकार: वैसे तो ज्यादातर बादामों के नाम उनके देशों के हिसाब से भी है जैसे अमेरिकन बादाम, ईरानी बादाम, स्पेनिश बादाम लेकिर मुख्य रूप से दो ही प्रकार के बादाम होते है, कैलिफोर्निया (अमेरिकन) बादाम और मामरा बादाम।

बादाम की उन्नत किस्में: बादाम की उन्नत किस्मों में कैलिफोर्निया पेपर सेल, नान पेरिल, ड्रेक, थिनरोल्ड, आई.एक्स.एल., नीप्लस अल्ट्रा आदि मुख्य रूप से बादाम की किस्में हैं।

बादाम की खेती के लिए आवश्यक जलवायु:

बादाम की खेती के गर्मियों में 30 से 35 डिग्री सेल्सियस तापमान पौधे की वृद्धि और गिरी भरने के लिए जरूरी होता है। वहीं सर्दियों में 2.2 डिग्री सेल्सियस तक का सामना करना पड़ेगा, लेकिन पत्ती के गिरने के अवस्था में फूल 0.50 डिग्री सेल्सियस से -11 डिग्री सेल्सियस तापमान में क्षतिग्रस्त हो सकते हैं। फूल जब छोटे होते है तब वे 2.2 डिग्री सेल्सियस से 3.3 डिग्री सेल्सियस तक का तापमान सहन कर सकते हैं, लेकिन अगर कम तापमान निरंतर लंबे समय तक बने रहने पर ये फसल को आसानी से नुकसान पहुंचा सकता हैं।

बादाम की खेती के लिए उपयुक्त मिट्टी

वहीं इसके लिए भूमि या मिट्टी की बात करें तो इसकी खेती के लिए समतल, बलुई, दोमट चिकनी मिट्टी और गहरी उपजाऊ मिट्टी की आवश्यकता होती है। इसकी खेती के लिए इस बात का विशेष ध्यान रखें कि जिस खेत में इसकी खेती जा रही है उसमें जल निकासी की उचित व्यवस्था होनी चाहिए।

बादाम की खेती के लिए खेत की तैयारी

बादाम के पौधे लगाने के लिए खेत को अच्छी प्रकार तैयार करना चाहिए। इसके लिए सबसे पहले मिट्टी पलटने वाले हल से खेत की जुताई करनी चाहिए। इसके बाद 3 से 4 बार कल्टीवेटर या देशी हल से जुताई करें। इसके बाद पाटा लगाकर खेत को समतल कर लेना चाहिए।